"युद्ध केवल हथियारों से नहीं बल्कि हौसलों से भी जीते जाते हैं"!- लोक सभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन

नई दिल्ली, 22 सितंबर, 2015: लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने इंडिया गेट के समीप लगी 1965 के भारत पाक युद्ध में देश की अदम्य वीरता, सर्वोच्च बलिदान और महाविजय के प्रतीक प्रदर्शनी "शौर्याजंलि" देखी। इस प्रदर्शनी में उस युद्ध के दौरान मातृभूमि की रक्षा और दुश्मन को उसके घर में हराने की गाथाओं के साक्षी बनी। इस प्रदर्शनी के चीफ कोर्डिनेटर मेजर जनरल श्री ए.के. सपरा ने इस विशाल प्रदर्शनी के प्रत्येक हिस्से को सबको दिखाया।

श्रीमती सुमित्रा महाजन ने अपने संदेश में लिखा कि यह प्रदर्शनी हमारे प्रत्येक भारतवासी के लिए एक प्रेरणा है। हर शहर, कस्बे में, कम से कम प्रांत की राजधानी में तो यह प्रदर्शनी लगनी ही चाहिए। प्रदर्शनी को देखकर ऐसा लगता है कि यह हमारे देश की आत्मशक्ति को अपम्पार कराने का दर्शन कराती है। मेरा भारत महान् की अनुभूति होती है।

श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कहा है कि हमारी सेनाओं के हौंसले, संसाधनों की कमी पर कभी नहीं रुके बल्कि हर युद्ध में हमारी सेना हर मोर्च पर वीरतापूर्वक लड़ती रही। देश की जनता हर युद्ध में उसकी सबल और विश्वास बनकर खड़ी रही। किस तरह से सैन्य, अर्द्ध सैनिक बलों के साथ एनसीसी कैडेडों, स्काउंट, सामाजिक संस्थानों, आम जन एक सूत्र में हमारे देश की रक्षा के लिए जुड़ी रहीं। यह देखने, सीखने और समझने का अनुभव मुझे आज ऐतिहासिक राजपथ पर हुआ। प्रदर्शनी का स्थल अमर जवान ज्योति के निकट है। वहां से गुजरते समय हमेशा ही देश के सैनिकों के बलिदानों की याद ताजा हो जाती है। इस प्रदर्शनी के माध्यम से 1965 के घटनाक्रम के नायकों और उनके द्वारा गढ़ी गई वीरता को देखकर मुझे अनुभव करने का अवसर मिला। उस समय के हमारे हथियारों, दुश्मन से जीते टैंकों, गोला बारूद, संचार साधनों, लड़ाकू विमानों के साथ सैन्य बलों की टुकड़ियों का जो सजीव चित्रण हुआ, आधुनिक तकनीक और वास्तविक रूप से किया गया है, यह प्रशंसनीय है। जिस तरीके से आम जनों को यहां पर हथियारों के साथ, टैंकों और वीर सैनिकों के साथ मिलने और बातचीत करने का अनुभव मिल रहा है उससे उनकी आंखों की चमक और अंदर का आत्मविश्वास पढ़ा जा सकता है। यह प्रदर्शनी अपने आप में देश के लिए सीख है। यह हमें यह विश्वास दिलाती है कि भारत जिसने कभी कोई युद्ध किये, हमेशा कई युद्ध जीते बल्कि न चाहते हुए भी हथियारों का जबाव हथियार से देना पड़ा है। उसने युद्धों में विजय और वीरता, बलिदान का वर्णन किया है। भविष्य में कभी भारत के ऊपर यदि कोई ऐसी चुनौती आती है तो हमारी सेनायें, हमारे युवा और हमारा पूरा देश इसका मुंहतोड़ जबाव देने में सक्षम है।

बाद में श्रीमती सुमित्रा महाजन को मेजर जनरल ए.के. सपरा और उनके अनुयायियों ने स्मृति चिह्न भेंट किया।